काव्य स्वरूप +
काव्य का प्रयोजन –

B.A. III Yr.
[illegible] Sanskrit Deptt.

काव्य का व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है – 'कवेः कर्म काव्यम्'
कवि शब्द भी √कुङ् (शब्द करना) या कव् धातु से 'इ' प्रत्यय
लगाकर बना है, जिससे उसका अर्थ है शब्दों के सहयोग
से चमत्कारपूर्ण वर्णन करनेवाला और ऐसे ही वर्णन को काव्य
कहते हैं। ऐसा ही अर्थ परम्परा से चल रहा था जैसा कि
आनन्दवर्धन संकेत किया है – सहृदयहृदयाह्लादि शब्दार्थ-
मयत्वमेव काव्यलक्षणम्' (ध्वन्यालोक – 1-1 की वृत्ति)।
यही बात काव्य के परम्परागत अर्थ के विषय में प्रकारान्तर
से वामन ने भी कही थी – 'काव्यशब्दोऽयं गुणालंकार-
-संस्कृतयोः शब्दार्थयोर्वर्तते' (काव्यालंकार सूत्रवृत्ति – 1|1|1)
इससे शब्दार्थ - साहित्य - प्रस्थान की प्राचीनता सिद्ध होती
है। (A) on 2nd side..

सभी काव्य लक्षणों में मम्मट के द्वारा दिया गया लक्षण
पूर्ण, सन्तुलित तथा समन्वयवादी है। ध्वनि काव्य, उसमें भी रस-
ध्वनि के प्रति मम्मट का विशेष झुकाव है। रस को ये काव्य
प्रधान तत्व मानते हैं – ये रसस्याङ्गिनो धर्माः (का० प्र०
गुण का लक्षण 8|1), मुख्यार्थहतिर्दोषः रसश्च मुख्यः
(का० प्र० दोष का लक्षण 7|1)। फिर भी काव्य की परम्परागत
कल्पना की सर्वथा उपेक्षा न करके चित्रकाव्य को काव्य-भेद
में स्थान देते हैं। इस प्रकार काव्य की द्विविध कल्पनाओं
(ध्वनि-युक्त, ध्वनि-रहित) का समन्वय इनके काव्यलक्षण में
मिलता है। इनका काव्य लक्षण 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावन-
लंकृती पुनः क्वापि' दोनों अतिवादी काव्यों का समावेश कर
लेता है।

शब्द और अर्थ दोनों का समान रूप से प्राधान्य
केवल काव्य में ही होता है। वेदादि शास्त्रों में शब्द-मात्र की

तथा इतिहास पुराणादि में केवल अर्थ की प्रधानता होती है। 'शब्दार्थौ' कहकर शब्द और अर्थ इन दोनों को काव्य जगत् से दूर रखा गया है। 'अदोषौ' में दोषों से रहित शब्दार्थ का निरूपण है। ध्वनिवादियों ने नित्य और अनित्य रूप से दोष माने हैं मम्मट का भी भाव है कि नित्य दोषों का परिहार हो, रसबोध में बाधा न हो तो दोष की महत्ता नहीं। 'सगुणौ' का भी ध्वनि और चित्रकाव्य के प्रसंग से पृथक् तात्पर्य है; ध्वनि या रस के प्रसंग में मुख्य अर्थ और अन्य प्रसंगों में 'गुण' का गौण अर्थ ग्राह्य है। अलंकारों के विषय में मम्मट का मत है कि सर्वत्र सालंकार (अलंकार के साथ) शब्दार्थ ही रहें ~~या न रहें~~ किन्तु यदि रस या ध्वनि का चमत्कार हो तो अलंकार महत्त्वहीन हैं – रहें या न रहें। मम्मट के लक्षण में सब प्रकार के काव्यों का समावेश हो जाता है।

(1) .. आचार्य भामह कहते हैं – 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' (काव्यालंकार -1-16) अर्थात् शब्द और अर्थ का सहभाव ही काव्य है। दण्डी ने काव्य-लक्षण की विवेचना करते हुए काव्यादर्श के रचयिता दण्डी ने कहा – 'इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली', अर्थात् 'इष्ट' अर्थात् सहृदय जनों को सुन्दर लगने वाले (वाच्य, लक्ष्य और व्यङ्ग्य रूप तीनों प्रकार के) लोकोत्तर चमत्कारजनक होने के कारण अर्थों से व्यवच्छिन्न यानि कि कुछ विशिष्ट बना दी गई पदावली ही काव्य है। 'इष्ट' अर्थात् चमत्कारपूर्ण अर्थ से युक्त-पदावली को का काव्य का शरीर प्रतिपादित करते हैं। काव्य के आत्मतत्त्व के रूप में वे 'अलंकार' को स्वीकार करते हैं।

वामन वैसे तो काव्य का कोई पृथक् लक्षण नहीं करते, फिर भी उनका चमत्कारव्यापक प्रमुख तत्व 'अलंकार' है, जो प्रधान रूप से विद्यमान है। उनका अलंकार शब्द कोई नहीं।